ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द ने वर्णाश्रम–मर्यादा को गुण–कर्म के अनुसार माना है किसी जाति के, जन का उत्तम और निकृष्ट होना, जन्म और नाम से ही नहीं मानते थे। उनके निश्चय में जैसे किसी गुण–कर्म हैं वैसे ही वर्ण में यह परिगणित होना चाहिए। वे कहते हैं कि–"जिस पुरूष में, जिस वर्ण के गुण–कर्म हों उसको उसी वर्ण का अधिकार देना चाहिए। ऐसी अवस्था रखने से सब मनुष्य उन्नतिशील हो जाते हैं।

महाराज शूद्रों के, सुधार के बड़े पक्षपाती थे। उन्हें भी सर्जनकर्त्ता की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि में समझते थे। चतुर्थ वर्ण से घृणा करना, उसे अस्पृश्य समझना उनके निकट मनुष्य पदवी से गिरा हुआ कर्म है। जो लोग कुत्तों को छूते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैंसों को हाथ लगाते हैं, ऊंटों का स्पर्श करते हैं, घृणित जीव–जन्तुओं को भी छू लेते और अपने हाथ से जूता तक उतार देते हैं, वे मनुष्यों को अछूत समझें, उनसे दूर भागा करें, यह कितना अन्याय है, कितना अधर्म है, यह बात सहज से समझी जा सकती है। महाराज शूद्रों को वेदाधिकार देते हुए लिखते हैं–"जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सब के लिए बनाये हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किये हैं।

–श्रीमद्दयानन्द–प्रकाश

"हरिजन"

तुम शान्ति–शील के साधु चित्र, रे कौन तुम्हें कहता अछूत ?
कब उतरेगा शिर से उसके यह छुआछूत का प्रबल भूत !
ओ भारत नभ की विमल रश्मि, ऐ भारत माता के सपूत,
कब होगी तेरी दया–दृष्टि, ओ महाशान्ति के स्वर्ग–दूत !
बस, एक बार तो हो प्रसन्न, दे दो भक्तों को शुभाशीष !
रे कौन तुम्हें कहता अछूत ? तुम तो योगीश्वर, युगाधीश !

–आरसी प्रसाद सिंह

यह अंक डी. ए. वी. हमीरपुर के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य समाज कुल्लू के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६८वां विक्रमी सम्वत् २०७० सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११४ जून २०१३

'महर्षि पंतजलि प्रणीत अष्टांग योग व अष्टचक्रों का संबंध'

♦परमवीर सिंह, डी. ए. वी. हमीरपुर (हि. प्र.)

महर्षि पंतजलि ने योग के आठ अंगों का वर्णन किया है जिन्हें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के रूप में जाना जाता है।

१. यम का अर्थ है–(अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) इनका संबंध व्यक्ति की आन्तरिक भावानाओं से है। सत्य, अहिंसा, आदि के पालन न करने से व्यक्ति अपने साथ समाज व देश का हानि करता है। ये शरीर में स्थित नकारात्मक व विकारी भावों से होता है। इसका संबंध मूलाधारचक्र से है। जब मूलाधार की शक्ति जाग्रत होती है तब झूठ, हिंसा अति कामवासनाएं आदि विकारी भाव समाप्त होने लगते हैं।

२. नियम–(शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर–प्राणिधान) इनका संबंध व्यक्ति के आचरण से संबंधित है। इनके आचरण करने से पहले व्यक्ति को ज्यादा हानि होती है। समाज को उसके परिणामस्वरूप हानि होती है। इसका संबंध स्वाधिष्ठान चक्र से है। इस चक्र के जागृत होने से या उस चक्र पर संयम करने से नियम के पालन में सहयोग प्राप्त होता है, या नियम के पालन से स्वाधिष्ठानचक्र जाग्रत हो जाता है।

३. आसन–आसन का संबंध स्थूल देह की निरोगता व सोष्ठव से है। इसका संबंध मणि पूर चक्र से है। माणिपुर चक्र की शक्ति जाग्रत होने से पाचन प्रक्रिया शरीरगत विकार ठीक होते हैं।

४. प्राणायाम–इसका संबंध अनाहत चक्र है, जो फेफड़े व हृदय क्षेत्र में स्थित है। उसके जाग्रत होने से प्राणशक्ति को प्रबल हर हृदय फेफड़े, तन्त्र को ठीक रखकर उसकी शक्ति को जाग्रत किया जा सकता है।

५. प्रत्याहार–प्रत्याहार का सम्बन्ध 'विशुद्धि चक्र' से है। इस चक्र के जाग्रत होने से इन्द्रियों के प्रति आसक्ति घटती है व इन्द्रियों पर अधिकार होने लगता है।

६. धारणा–धारणा का सम्बन्ध 'आज्ञा चक्र' से है। प्रत्याहार द्वारा जब इन्द्रियाँ एवं मन अन्तर्मुखी होने लगे, उसको एक स्थान पर स्थिर करने का नाम ही धारणा है।

७. ध्यान का सम्बन्ध मनश्चक्र ललना व बिन्दु चक्रों से है। धारणा द्वारा संचित चेतना के सम्पूर्ण प्रवाह व शक्ति को अपने अंदर स्थित कर उसको स्थिर करना ही मनश्चक्र की जाग्रति है।

८. समाधि–सभी विकारों, विचारों से मुक्त केवल ध्येय मात्र (ईश्वर) के स्वरूप व स्वभाव को प्रकाशित करने वाला शून्य की स्थिति ही 'सहस्रार चक्र' जाग्रति या समाधि की अवस्था व परामानन्द की स्थिति है।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र0, मो. : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	: रत्न लाल वैद्य, उप–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184–60332
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज–कण्डाघाट मो. : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी) मो. : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, सुन्दर नगर मो. : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: 1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591–05378 2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161–25501
सह–सम्पादक	: राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	: मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.)
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

रात और दिन के पुनः–पुनः आते जाते रहने से जीवन के सुनहरे पल व्यतीत हो रहे हैं। यह क्षण टिक–टिक करता हुआ रातों–दिनों, महीनों–सालों और शताब्दियों में परिवर्तित हो जाता हैं। इस समाज में जिन विभूतियों ने अपने विचारों की छाप संसार में छोड़ी वे वास्तव में महापुरूष कहलाये तथा इस पृथ्वी में सुकृत्यों के बीज बोकर, प्राणीमात्र का भला करके संसार के रंग–मंच से इस नश्वर चोले को बदल कर चले गये। उन्होंने संसार को नई दिशा देकर समाज की दशा बदल कर इतिहास के पन्नों में सदा के लिये अमर हो गये। उनके सुन्दर श्रेष्ठ कार्यों की समाज सदा याद करता रहता है। आज राम भक्त कवि तुलसीदास, संत शिरोमणि कबीर दास, महान समाज सुधारक ऋषिवर दयानन्द आदि अनेकों कर्मवीर इस विश्व कर्म स्थली में अपने कर्मों की सद्वर्षा करते हुये सदा और सर्वदा के लिये भले ही हमसे दूर हो गये हों लेकिन उनके शुभ, विचार संस्कार, आचार और व्यवहार सदा हमारा पथ प्रदर्शन करते रहेंगे। राम आये, श्री कृष्ण आये। इस प्रकार त्रेता और द्वापर के चले जाने के उपरान्त अब हम कलियुग में प्रवेश कर चुके हैं। समय निरन्तर अबाध गति से आगे बढ़ रहा है। वेदों के अनुसार इस सृष्टि को चले हुये दो अरब साल होने जा रहे हैं। समय रूकता नहीं। प्राणी इस भू–मण्डल के रंग मंच पर आते हैं और चले जाते हैं। तभी तो कबीरदास जी ने लिखा है जो आज के युग में ही नहीं हर युग में सार्थक रहेगा।

कबीरा यह तन जायेगा, सकहूँ ते लेहूँ वहोरी,
नंगे पांव वे गये, जिनके लाख करोड़ी।

वेद शास्त्र तथा संतों की सुरीली वाणी हमें यही उपदेश देती हैं कि हमें प्रत्येक साल के प्रत्येक पल को अनमोल समझ कर इसका सदा सदुपयोग करते रहना चाहिये। इस प्रकार की भावना की गाँठ बांध कर आगे बढ़ते रहना चाहिये तथा हर दिन को एक शुभ दिन और जन्म दिन के रूप में जानना और मनाना चाहिये तभी इस जीवन की सर्थकता है। मनुष्य न तो अपने साथ कुछ लेकर आया है और न कुछ लेकर जायेगा। महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है कि मृत्यु के उपरान्त सम्बन्धी शव को चिता पर रखकर वापिस घर लौट आते हैं। शमशान भूमि में उस जलती अग्नि में उस प्राणी के सुकर्म और कुकर्म उसका पीछा करते रहते हैं। जैसे अनेकों गऊओं के बीच बछड़ा अपनी माँ के स्तनपान करने लगता हैं। वैसे ही प्राणी की मृत्यु के उपरान्त उसके कर्म उसका पीछा करते रहते हैं और उसे भोगने पर ही मनुष्य को छुटकारा मिलता है। शमशान हमारा मूक शिक्षक है। अपनी मूक भाषा में मानो वह उपदेश देता रहता है कि हे प्यारे अच्छे कार्य करके ही मेरे पास आना, अन्यथा जन्म जन्मान्तरों तक पछताना पड़ेगा। संसार ईश्वर का सुन्दर काव्य है। योगी लोगों का चित्त इसी की सुन्दरता को निहारते–निहारते व्यतीत हो गया। अन्त में वे यही कह उठे कि उस परम् पिता परमेश्वर से बढ़कर कोई नहीं है। वास्तव में देव दयानन्द ने मानव भक्ति को ही सबसे बड़ी शक्ति कहा हैं। प्राणीमात्र का भला चाहना, रोते के आंसू पोंछना, शक्ति–सामर्थ के अनुसार समाज के अन्ध विश्वासों से दो–दो हाथ करना ही देश भक्ति है। यही ऋषिवर ने बताया और समझाया है। यदि कोई नेक कार्य करते हैं तो भीतर से हमें आत्मिक शान्ति का अहसास होता है। प्रभु भक्ति का यह प्रसाद है। इसे नहीं खोना चाहिये। अभिमान मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। जब वह भीतर प्रवेश करता है तो शान्ति, सदाचार के सभी किवाड़ बन्द हो जाते हैं। घर का सुखमय वातावरण दूषित हो जाता है। घर की दौलत चाहे कितनी भी क्यों न हो वह घर को तब तक दुःखमुक्त और सुखयुक्त नही बना सकती जब तक वहाँ शान्ति और सदाचार की सुखमय वायु की तरंगों की सुगन्ध प्रवेश न करे। इस दुनियाँ में फूल और कांटे दोनों ही है। हमें अपने लिये वही चुनना चाहिये जो हम दूसरों के लिये बाँटना चाहते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने स्वाबलम्वन के अवलम्बन पर अधिक जोर दिया और स्वाध्याय युक्त जीवन व्यतीत करने की सभी को प्रेरणा दी। ऋषिवर के समय भारत की स्थिति अति दयनीय थी। चारों ओर अन्धविश्वास और आडम्बर का साम्राज्य था। भोली–भाली जनता को कपटी लोग अपनी चालों के जाल में ऐसा फांस कर रखते थे कि व्यक्ति उसके माया जाल से बाहर न निकल सके। प्रातः स्मरणीय राम भक्त कवि तुलसीदास ने भी अपने समय की ढौंग विद्या पर प्रकाश डालते हुये लिखा है :

कलिमल हरे धर्म सब लुप्त भये सद्–ग्रन्थ
दम्भिनी निज मत कथा करि प्रकट कियो बहुपन्थ।

मैं स्वयं ब्राह्मण कुल में पैदा हुआ हूँ। मेरी बचपन की एक घटना ने मुझे कालान्तर में सोचने पर वाध्य किया कि आखिरकार हिन्दू समाज के हमारे व्यक्ति अपने ही लोगों से नफरत क्यों करते हैं ? मैं तब ५–६ साल का रहा हूंगा। मेरे दिमाग में शरारत सूझी कि क्यों न सुखी लकड़ियों के लम्बे–लम्बे गट्ठों को ले जा रही महिलाओं में से किसी एक का संतुलन धक्का देकर बिगाड़ा जाये ताकि बोझ का सन्तुलन बिगड़ जाने से नीचे गिर जायेगी और मुझे उसमें आनंद आयेगा। लेकिन हुआ इससे उल्टा ही। जैसे ही मैंने एक अम्बड़ेकर नगर की महिला को धक्का दिया तो उसने बड़ी मुश्किल से अपने सन्तुलन को बना लिया। उधर मेरी बड़ी बहन ने घर पर शिकायत कर दी कि इसने हरिजन

महिला को छू लिया है। घर वालों ने मुझे तब तक घर आने नहीं दिया जब तक जल की तीन–चार बाल्टियाँ मेरे सिर पर न दे मारी। मैं हैरान था कि इसमें मेरा क्या दोष है ? कालान्तर में मुझे अपनी इस घटना का ज्ञान हुआ। जाति–पाति की छोटी, मोटी और खोटी भेद–भाव की दीवारें आज भी अपना मुख फैलाकर समाज के वातावरण को दूषित कर रही हैं। आज भी हमारे नेता वोट बैंक ठीक करने हेतु ब्राह्मणवाद, राजपूतवाद, महाजनवाद, कोलीवाद तथा जाटवाद आदि अनेकों भागों में फूल की पंखुड़ियों की तरह बंटे हैं। केवल और केवल मात्र १६ वीं सदी में धर्मधुरन्धर ऋषिवर दयानन्द ने सभी को आर्य बनने का आह्वान किया था। कविवर मैथीलिशरण गुप्त जी ने आर्यों के सम्बन्ध में कुछ इस प्रकार कहा था :

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिये जीते ना थे,
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते ना थे।
अपने लिये वे दूसरों का हित कभी हरते न थे,
चिन्ता प्रपूर्ण अशान्ति पूर्वक वे कभी मरते न थे।।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने इस देश को अपना प्राचीन नाम आर्यवर्त और यहाँ के निवासियों को आर्य और इनकी भाषा को आर्यभाषा अर्थात् हिन्दी की पहचान दी थी। यही नहीं प्राचीन आर्यों की संस्कृति, आर्य ग्रन्थों की रक्षा और कुरीतियों, पाखण्डों तथा आडम्बर का सर्वनाश करने हेतु उन्होंने सत्य को प्राथमिकता दे कर ही आर्य समाज की स्थापना सन् १६७५ में बम्बई के काकड़बाड़ी में की थी। स्वामी जी ने अपना कोई मत, साम्प्रदाय या धर्म नहीं चलाया अपितु अपने गुरू, दण्डी स्वामी विरजानद के बताए रास्ते पर चलने का, वेदों की रक्षा करने तथा विश्व में भ्रातृभाव फैलाने का प्रचार–प्रसार करते रहे। उन्होंने मानव की एक जाति वेदानुसार मानी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व और शुद्र तो कर्मानुसार व्यवस्था थी। एक परिवार में कर्मानुसार चार भाईयों में एक ब्राह्मण दूसरा क्षत्रिय तीसरा वैश्य और चौथा शुद्र हो सकता था। अपने कर्मानुसार ही शुद्र, ब्राह्मण और ब्राह्मण शुद्र बन सकता था। ऋषिवर दयानन्द विश्व रंगमंच पर ऐसे युग पुरूष थे जिन्होंने जाति–पाति को तोड़ा और कबीर जी की इन पंक्तियों को सार्थक सिद्ध किया :

जाति–पाति पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।

वेदों के प्रमाणों से जब स्वामी जी महाराज ने जन–मानस को समझाया तो इससे पाखंडियों के तम्बू हिल गये। उन्होंने अनेक कुचक्र चलाये लेकिन स्वामी जी के विचारों, तर्कों और युक्तियों के तूफान के आगे उनके तम्बू धाराशाही होने लगे। महर्षि आर्य समाज के नियमों में लिखते हैं। हमें अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

मेरे एक डॉ. मित्र मुझे चन्दपुर में मिले। मिलते ही वे कह उठे "आर्य जी मैं बड़ा हैरान हूँ कि जब भी देखो आप शमशान भूमि में ही नज़र आते हैं।

उस समय शमशान भूमि में चार शवों का संस्कार किया जा रहा था। मैंने डॉ. महोदय से निवेदन किया कि हम वरिष्ठ नागरिक अब जीवन के उस पड़ाव में आ पहुँचे है जहाँ से इस जीवन का अन्तिम अध्याय जुड़ा है। न मालूम कब किसके नाम का पत्र निकल आये। कवि ने ठीक ही कहा है :

"खलक चवैना काल का कुछ मुख में कुछ गोद"

समस्त विश्व मृत्यु का भोजन है। कुछ को जबड़ों में ले रखा है शेष उसकी गोद में हैं।

ऋषिवर दयानन्द जिसे अंग्रेज 'विद्रोही फकीर' भी कहते थे, के जीवन की एक छोटी सी घटना है, जो इस प्रकार से है : आर्य समाज के विद्वानों को शास्त्रार्थ करने के लिए मेरठ में पौराणिक पण्डितों ने ललकारा। मेरठ के आर्यजनों ने तार भेज कर स्वामी जी को शास्त्रार्थ हेतु बुलया। स्वामी जी के आने की जानकारी मात्र से पौराणिकों में भय समा गया। कोई भी स्वामी जी से शास्त्रार्थ हेतु नहीं आया। इस बार स्वामी जी ने आर्य समाजियों को झिड़कते हुए कहा था, 'जब भी कही शास्त्रार्थ के लिए ललकारता है आप मुझे तार भेज देते हैं, लेकिन जीवन के इस कच्चे घड़े ने भी एक दिन अवश्य फूटना है। मेरे चले जाने के बाद आप किस दयानन्द को शास्त्रार्थ करने के लिए बुलायेंगे। अतः अपना सहारा आप बनो और प्रतिदिन स्वाध्याय करते रहा करो।' स्वामी जी की बातों का इतना प्रभाव पड़ा कि उस समय आर्य समाज का एक चपड़ासी भी साधारण शास्त्री के बराबर ज्ञान रखता था। लेकिन हैरानी इस बात की है कि हम शमशान भूमि से बाहर आते ही अपने कर्मों से यह बताने का प्रयत्न करते हैं कि मानो हम तो स्थावर (टिकाऊ) हैं। जाने वाला दूसरा ही है। बस इस यक्ष प्रश्न में व्यक्ति उलझकर रह जाता है। एक दिन उसे भी काल के विकराल हाथों द्वारा चकनाचूर कर दिया जाता है। फिर वह बात चरितार्थ हो जाती है 'अब पछताये क्या होत है जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।' इस सम्बन्ध में कबीर की यह वाणी हमें उपयुक्त शिक्षा देती है :

काल करन्ता आज कर आज करन्ता अब,
पल में परलै होत है बहुरि करेगा कब।

एक हिन्दी कवि का यह कहना सार्थक है :

करना है जो काम उसी में चित लगा दो,
आत्मा पर विश्वास करो सन्देह भगा दो।
पूर्ण तुम्हारा मनोरथ अगर अभी न होगा,
होगा तो बस अभी नहीं तो कभी न होगा।

अतः उठो, जागो और कर्तव्य पथ पर आगे बढ़कर ऋषिवर के स्वप्न को साकार करो।

–कृष्ण चन्द आर्य

६, ९, ११

♦अभिमन्यु कुमार खुल्लर, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग से उपनिदेशक पद से सेवानिवृत्त श्री नाहरसिंह वर्मा से भेंट वैदिक सार्वदैशिक के कार्यालय में कुछ वर्ष हुई थी जब मैं तत्कालीन सम्पादक श्री सुरेन्द्र सिंह कादियान के पास बैठा हुआ था। कादियान जी ने मेरा उनसे परिचय कराया। नाम सुनते ही श्री वर्मा जी ने कहा कि प्रकाशन के पूर्व ही वह मेरे लेख पढ़ लेते हैं। अब कल ही फोन पर उन्होंने पूछा कि सद्य प्रकाशित मेरा कौन सा लेख है। मैंने बताया ''ईश्वरसिद्धि संबंधी मन्तव्य और मैं'' तो तत्काल बोले आपका लेखों का शीर्षक चयन अद्‌भुत होता है। आधा मैदान तो शीर्षक से ही मार लेते हो, और शेष सरल, सहज, बोधगम्य हिन्दी से। अब इस लेख का शीर्षक अंकों में देखकर श्री वर्माजी के अतिरिक्त अन्य पाठकों को अटपटा भी लगेगा और कौतुहलजनक भी।

स्पष्ट कर देता हूँ। यह शीर्षक मिला महाराष्ट्र के भण्डारा जिले की तीन बच्चियों से जिनके साथ सामूहिक बलात्कार किया गया और फिर मारकर कुए में फैंक दिया गया। उनकी यही आयु थी। पीड़ा हुई, अतीव पीड़ा हुई, यह सोचकर कि अदम्य कामवासना के वशीभूत होकर बलात्कार किया गया और संभावित परिणाम की आंशका से सबूत क्या, पात्रों को ही मौत के घाट उतार देने में न भय लगा, न शंका हुई और न लज्जा लगी। पाप कर्म से रोकने की इन ईश्वरप्रदत्त चेतावनियों को जैसे इन लोगों ने सुना ही नहीं। कामासक्त होकर पशु भी ऐसा व्यवहार करते हुए न तो देखे गये, न पढ़ने में आए और न ही सुने गये। केवल एक यही उदाहरण नहीं है। यदि मैं संकलित सभी उदाहरणों का उल्लेख करूँ तो अनेक पृष्ठ भर जावेंगे और वीभत्सता की सडांध लेख में से निकलने लगेगी। समाचारपत्रों में और दूरदर्शन द्वारा प्रसारित सभी चैनलों में इस तरह के समाचारों में दिन रात वृद्धि ही हो रही है।

दामिनी बलात्कार काण्ड, निर्भया बलात्कार काण्ड पूरे देश को हिला चुका है। विश्व मीडिया में इसकी गूँज हो चुकी है। बड़े तगड़े आन्दोलन के फलस्वरूप केन्द्र सरकार को पहिले अध्यादेश लाना पड़ा और अब संसद इस बिल को पारित कर चुकी है। पहिले की अपेक्षा अब रेप (बलात्कार) की परिभाषा का दायरा बढ़ा दिया गया है और सजा भी। बलात्कारी को फाँसी दिये जाने का प्रावधान रखने की माँग सभी तरफ से जोर शोर से उठी थी पर इस प्रकरण पर विचार करने के लिये सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त माननीय मुख्य न्यायाधीश वर्मा जी की समिति ने ''आजीवन कारावास'' की सजा–बिना पैरोल के दिये जाने की सिफारिश की थी। मुझे भी लगा कि माननीय वर्मा जी, पूर देश में चल रहे आन्दोलनों, प्रदर्शनों और जनता की माँग से इतने बेखबर हैं कि सजा–ए–मौत की सिफारिश भी नहीं की। कुछ समय गंभीरता से सोचने पर समझ में आया कि ट्रायल कोर्ट (सबसे निचली अदालत) से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक की लम्बी कानूनी प्रक्रिया, जिसमें वर्षों लग जाते हैं, के पश्चात् ही जघन्यतम् हत्या के अपराधी को जिसमें प्रत्येक न्यायालय यह सुनिश्चित करने पर ही फाँसी की सजा देता है कि अपराध rarest of rare (जघन्य अपराधों में भी जघन्यतम्) श्रेणी का है। अपराधी को एक अवसर मिलता है कि वह राष्ट्रपति के पास प्राण भिक्षा की याचना करे। प्रत्येक अपराधी प्राण भिक्षा की याचना करता है। प्राणभिक्षा की याचना पर राष्ट्रपति महोदय को 'स्वविवेक' से निर्णय करने का अधिकार है। लेकिन संवैधानिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत राष्ट्रपति दया की याचना केन्द्रीय गृहमंत्रालय को भेजता है और केन्द्रीय गृहमंत्रालय राज्य शासन को भेजता है जहाँ अपराध घटित हुआ हो। राज्य शासन विचार करता है और अपनी अनुशंसा केन्द्र को भेजता है। केन्द्रीय गृहमंत्रालय राज्य शासन की अनुशंसा पर विचार कर अपनी अनुशंसा राष्ट्रपति को भेजता है। इस पूरी प्रशासनिक प्रक्रिया में अनेक वर्ष लगते हैं फिर राष्ट्रपति कब निर्णय लेते हैं, इसमें भी अनेक वर्ष लग सकते हैं। फिर 'स्व–विवेक' से क्या निर्णय लेते है–यह समस्त आलोचनाओं से ऊपर की चीज है। आश्चर्य हुआ कि एक राष्ट्रपति ने उनके समक्ष प्रस्तुत किये गये बारह प्राणदण्ड पात्र अभियुक्तों में से किसी को भी प्राणदण्ड की सजा नही दी। न्यायाधीश वर्मा जी की अनुशंसा का रहस्य समझ में आ गया। यह भी समझ में आ गया कि फाँसी से ज्यादा भयानक, कष्टकारक तिल–तिल की मौत है जो क्षणिक कामवासना की तृप्ति के उन्माद के कारण अपराधी जीवन भर भोगता रहेगा। मेरे लिये मामला यहीं खत्म नहीं हुआ। मैं समाचारपत्रों से कटिंग करता रहा न्यूज चैनलों की खबरों को संकलित करता रहा। दामिनी बलात्कार काण्ड के बाद बलात्कार की घटनाओं की जैसे बाढ़ सी आ गई है। IBN 7 के दिनांक ७ मार्च १३ के समाचार में बताया गया कि दिल्ली में प्रतिदिन 'रेप–की चार घटनाऐं होती है। चीन ने तो दिल्ली को रेप की राजधानी ही बता दिया। घटनाओं में वृद्धि का कारण मीडिया का भय हो सकता है। यदि पुलिस ने कार्यवाही नहीं की और खबर मीडिया को

मिल गई तो संबंधित अधिकारियों की खैर नहीं।

मैं जानना चाहता हूँ। सख्त कानून पास होने से, मीडिया में बलात्कारियों की दुर्गति से न्यायालयों में लम्बी व कानून की कड़ी प्रक्रियाओं में से गुजरने की आंशका से और इससे पहिले पुलिस के सत्कार के भय से जनमानस में इस दुष्कृति के प्रति कोई विराग का वातावरण बन पाया है या भविष्य में बन सकेगा ? मुझे लगता है कि 'नहीं'। क्यों ? इसलिये कि मनुष्य जिन संवेगों से बना है उनका कम काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर बहुत प्राचीन काल से ही मनीषियों ने निर्धारित कर दिया है। इनमें प्रथम स्थान 'काम' को दिया है।

काम का साधारण अर्थ, कामना, इच्छा है परन्तु जिस कामना को नियंत्रित करने का उपदेश दिया जाता है, वह सामान्य कामना या इच्छा नहीं है। काम के आगे वासना जोड़ने से कुछ अर्थ स्पष्ट होता है। कामवासना का शब्दकोषीय अर्थ वासना का निवास या घर होता है। यदि कामवासना को रूढ़ रूप देकर 'जनेन्द्रिय जन्य उत्तेजना' का अर्थ दिया जावे तभी ठोस अर्थ मिलता है। इसी अर्थ में हम इस शब्द का उपयोग करेंगे।

गीता के अनेक श्लाकों में इसकी विकरालता का वर्णन है। श्री कृष्ण महाराज ने काम को ज्ञान का ढकनेवाला तथा व्यक्ति का महावैरी कहा है। जैसे धुएं से अग्नि, मल से दर्पण तथा जेर से गर्भ ढंका रहता है वैसे ही इस काम के द्वारा ज्ञान ढ़का हुआ है। यह काम ''दुष्पूर'' है, 'अनल' है। दुष्पर–जिसे कभी तृप्त नहीं किया जा सके, अनल अर्थात् आग–काम सब कुछ भस्मीभूत कर देता है–अक्ल (बुद्धि) को सबसे पहले।

पौराणिक कथानकों में स्वर्ग के राजा इन्द्र, पृथ्वी पर ऋषियों की तपस्या के प्रभाव से अपने सिंहासन को डोलता हुआ अनुभव कर उनकी तपस्या भंग कराने के लिये रम्भा, मेनका जैसी अप्सराओं का उपयोग करते थे। ये अप्सराएं सफल भी होती थी। विरोधी राजा की हत्या कराने के लिये विष कन्याओं का उपयोग किया जाता था। महायुद्धों में गुप्त जानकारी प्राप्त करने के लिये रमणियों का उपयोग किया जाता रहा। 'माताहारी' का नाम सर्वाधिक विख्यात् है।

गीता और इन्द्र का उदाहरण ''कामवासना'' की दुर्दमनीयता को प्रदर्शित करता है और ये तथ्य श्रेष्ठ बौद्धिक वर्ग के व्यक्तियों के समक्ष प्रस्तुत किये गये थे। सामान्य, अति सामान्य व्यक्तियों के समक्ष नहीं बताये गये थे जिनका विवेक इतना जाग्रत नहीं होता कि नीर–क्षीर का विभेद कर 'संयम' की बात सोचे। उनके लिये काम का उद्वेग, सामान्य भूख–प्यास से अधिक नहीं और जिसकी संतुष्टि भी भूख–प्यास की संतुष्टी जैसी ही शीघ्र और 'कैसे' भी होनी चाहिये। पचास वर्ष से भी पूर्व कानपुर की एक घटना का स्मरण हो आया। एक व्यक्ति इतना अधिक कामातुर हो गया कि दिन–दहाड़े, बीच बाजार में उसने एक अज्ञात लड़की को पकड़ लिया और यौन क्रिया में भिड़ गया। लोगों ने उन पर चादर डाल दी।

विचार प्रवाह महर्षि दयानंद की ओर मुड़ गया। सन्यासी शिष्य स्वामी दयानंद मथुरा के छत्ता बाजार से गुजरते हुए यमुना के किनारे जाते और जल भर के लाते। आते–जाते समय दृष्टि सदैव जमीन पर रहती। यह भी उनकी ख्याति का कारण बनी। संभवतया, नहीं, नहीं। निश्चित रूप से महर्षि ने किसी भी नारी की आँख में आँख डालकर जीवनपर्यन्त नहीं देखा। महर्षि के बारे में कुलभूमि मासिक सितम्बर २००७ में लिखा था कि महर्षि घन्टों सिद्धासन पर बैठते थे। यह आसन वीर्य प्रवाह वाली नाड़ी को नियंत्रित करता था और 'मालकंगनी' औषधि का भी सेवन इसी हेतु करते थे। महर्षि एक समय भोजन करते थे, शुद्ध शाकाहारी स्वादिष्ट और रात्रि में दुग्धपान, फलादि। २४ घंटों का पूरा–पूरा समय विभाजन कर रखा था और उसका सख्ती से पालन करते थे–अन्यथा सोच विचार के लिये उनके पास समय ही नहीं **था, यही तो उत्तर दिया था कलकत्ते के युवक को जिसने महर्षि से प्रश्न किया था कि कामवासना ने उन्हें कभी सताया अथवा नहीं।**

महर्षि के जीवनीकार देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने (पृष्ठ ५७०) एक घटना का उल्लेख किया है। एक दिन एक सेठजी आए उनका दसवर्षीय पुत्र भी उनके साथ था। वह अत्यन्त लज्जालु था। किसी प्रकार महाराज ने उसे अपने पास बुलाया और उसे कहा कि तुम नित्य सुबह उठकर और हाथ मुँह धोकर अपने माता–पिता को नमस्ते किया करो और पाठशाला जाते समय अपनी पुस्तकें स्वयं ले जाया करो, नौकर को मत ले जाने दो। ''यदि मार्ग में कोई स्त्री तुम्हें मिल जाए तो उसकी ओर दृष्टि नीची कर लो नहीं तो उस स्त्री की आकृति तुम्हारे मन में घुसकर एक प्रकार की उष्णता उत्पन्न करेगी और तुम्हें धातुक्षीणता का रोग हो जाएगा जिससे तुम्हारा बहुत अनिष्ट होगा।''

गौर फरमाईए महर्षि दयानंद ने यह उपदेश 'दस साल' के लड़के को दिया। यह मानना मुश्किल ही होगा कि इस आयु का बालक कामवासना का क, ख, ग भी जानता होगा। फिर भी महर्षि को चिन्ता थी कि स्त्री–पुरूष के नेत्रों के मिलने से कामवासना की छवि बालक के मन पर भी बैठ सकती है।

आज हम कहाँ है ? दिन रात सैक्स परोसा जा रहा है। पूरी बाहु के ब्लाउज और साड़ियों से ढंकी तन वाली फिल्मी हिरोइनें अब दो चिन्दियों में आ गई है। टी.वी. चैनल्स पर भी

यही सब कुछ देखने को मिल रहा है। इस पर तुर्रा यह कि आइटम साँग (item song) के नाम पर फिल्मों में वह सब कुछ परोसा जा रहा है जो वैश्यालयों में भी फिल्मों से ही पहुँचता है। कुछ बानगी देखिए:–

१ मुन्नी बदनाम हुई यार तेरे लिये

२. बीड़ी जलाइले, जिगर से पिया, जिगर मा बड़ी आग है।

३. चोली के पीछे क्या है ?

४. शीला की जवानी

जब चौबीसों घण्टे, सिनेमा के पर्दे और टी.वी. पर यह परोसा जा रहा हो तो हम कैसे उम्मीद करें कि बच्चे गायत्री मंत्र का जाप करेंगे ?

अपवादों को छोड़कर हम सामान्य जन मांसभक्षी (नारी) हो गये हैं। नई पीढ़ी के युवक–युवतियों को; युवावस्था की दहलीज पर खड़े हुए बालक–बालिकाओं को इन्टरनेट के माध्यम से पूरा काम शास्त्र, देशी–विदेशी, मय रतिक्रियाओं के जीवित दृश्यों के साथ उपलब्ध है। अब मोबाइल पर भी इन्टरनेट उपलब्ध है। लुक–छुप कर, डर कर देखने की जरूरत नहीं है। कभी भी देखा जा सकता है।

कामवासना खुद आग है, उसमें घी डालने वाली एक दो बातों का उल्लेख और करूँगा। केन्द्रीय सरकार आन्दोलनों के आगे घुटने टेक कर बलात्कार के विरूद्ध अध्यादेश लाई और फिर फटाफट संसद में कानून पारित करा दिया। न तो केन्द्र सरकार और न ही राज्यसरकारें ''नशाबन्दी'' के लिए सख्त कदम उठाने को तैयार हैं। कारण स्पष्ट है कि यही मद ऐसा जिसमें अरबों रूपये की आय होती है और इस मद पर टैक्स बढ़ाने के विरूद्ध कभी कोई जन आन्दोलन नहीं होता। यही स्थिति धूम्रपान की है। शासन ने अपने उत्तरदायित्व की इति श्री वैधानिक चेतावनी–''धूम्रपान स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है'', अंकित कराकर दे दी। रही भोजन की बात उत्तर भारत में कचौड़ी समोसे एवं अन्य गरिष्ठ भोजन की दुकानों की भरमार है। मांस मछली युक्त पकवान व फास्ट फूड जमकर उपलब्ध है और जमकर खाये जाते हैं। पढ़े लिखे युवा वर्ग में 'रेव पार्टियों' का प्रचलन तीव्रता से बढ़ा है और बढ़ रहा है। आज भी युवा पीढ़ी फिल्मी सितारों को अपना ICON आदर्श मानती है इसलिये बैगपाइपर शराब का विज्ञापन करते हैं, अजय देवगन और कामोत्तेजक दवा रिवाइटल का सलमान खान। स्थानीय समाचारपत्रों में कामवृद्धि में सहायक तेल और अन्य दवाईयों के विज्ञापन भरे रहते हैं। रही ड्रग्स–नशीली दवाईयों की बात। उसका व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैला है। खिलाड़ी भी इनका उपभोग करते हुए समाचारों में आये दिन उपलब्ध रहते है।

अब मैं उन समाचारों की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा जिन्होंने मेरी विचारतंत्री को जड़ से हिला दिया, और इस विषय पर लिखने को मजबूर किया।

१–टाइम्स ऑफ इण्डिया, दिल्ली ३१–१२–२०१२ तथा दैनिक भास्कर, ग्वालियर के ३१–१२–१२ में समाचार प्रकाशित हुआ है कि महाराष्ट्र के थाने जिले के डॉम्बीविली नगर के पुत्र व पिता को १६ वर्षीय पुत्री के साथ लगातार दो वर्ष तक दुष्कर्म करने के कारण गिरफ्तार किया गया।

२–नईदुनियाँ, ग्वालियर ६ मार्च २०१३–रात्रि में प्रसूति के लिये ले जाई जा रही ६३ वर्षीय नर्स के साथ ४ लोगों ने बलात्कार किया।

३–नई दुनियाँ, ग्वालियर ७ मार्च २०१३ नाबालिग से किया पांच नाबालिग छात्रों ने दुष्कृत्य। छात्रा १३ वर्ष, दुष्कृत्य करने वाले छात्र ११ से १४ वर्ष।

४–१५ वर्षीय किशोरी से एक साल तक दैहिक शोषण किया एक २३ वर्षीय युवक ने।

५–मध्यप्रदेश में हजार लड़कियाँ गायब।

६–उत्तर भारत में सुरक्षित नहीं महिलायें।

७–७ मार्च २०१३ को ही रात्रिकालीन ६:३० बजे के बुलेटिन में बताया गया कि दिल्ली में वर्ष २०१२ में २०६ रेप प्रकरण दर्ज हुए। पिछले २४ घण्टों में ८ रेप यानी प्रतिदिन ४ रेप का औसत दिल्ली का ही है और एक जनवरी से १५ फरवरी २०१३ तक ८१ प्रकरण दर्ज हुए।

८–आज ही ४ अप्रैल २०१३ को सभी चैनलों पर रात्रिकालीन न्यूज बुलेटिन में यह समाचार आया कि गुडगाँव–हरियाणा का ४५ वर्षीय करोड़पति ट्रांसपोर्टर पिछले तीन वर्ष से अपनी सोहल वर्षीय पुत्री के साथ यौनाचार करता रहा। विद्यालय की प्राचार्य को सुबकती हुए लड़की ने आप बीती सुनाई। प्राचार्य की शिकायत पर पुलिस ने जाँच पड़ताल की और पिता को गिरफ्तार किया।

देश की जनसंख्या १२० करोड़ से भी बढ़ गई है। सही आंकड़े प्रस्तुत करना मुश्किल है फिर भी ५०–६० करोड़ के लगभग युवक युवतियाँ, नई सोच–कामवासना नियंत्रण (ब्रह्मचर्य–वीर्यरक्षा, सैक्स से परहेज) को एक टैब्बू–दकियानूसी विचार समझते हैं। सफलापूर्वक सैक्सुअल लाइफ बिताई जा सकती है, यह कार्य व्यापार महानगरों में काफी लम्बे समय पूर्व से धड़ल्ले से चल रहा है। कन्डोम व पिल्स का प्रचलन वैवाहिकों से ज्यादा बिन ब्याहों में है। मध्यस्तरीय नगर भी इससे अछूते नहीं है। हमारे ग्वालियर में ही यूनिवर्सिटी के बाहर की चाय आदि की दुकानों के पिछवाड़े मौज–मस्ती करने के अड्डे बने हुए थे जिनका भंडाफोड़ कुछ वर्षों पूर्व हुआ था। अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, बहुत बड़ा वर्ग है जो रोजी रोटी की जुगाड़ में पूरी जिन्दगी खपा देता है। नैतिकता

–अनैतिकता उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाती। उद्याम कामवासना का नियंत्रण करना चाहिये, उनकी समझ से बाहर की बात है।

यह है समस्या की जमीनी हकीकत। इसके एकाध पक्ष की चर्चा यदा कदा होती रहती है। शरीर का कैन्सर व्यक्तिगत होता है–समाज का कैन्सर अत्याधिक विस्तृत ५०–६० करोड़ में फैलता हुआ। बुरीतरह त्रसित समाज इससे मुक्ति के लिये फड़फड़ा रहा है। भारतीय समाज के उस वर्ग को जिसमें बुद्धजीवी, विद्वान् व संयासी आते हैं, सोचना चाहिये कि इस क्षेत्र में उनका ही सर्वोपरी दायित्व है। उन्हें मार्गदर्शन करना है, संगठित कर जनजागरण के कार्यक्रम चलाना है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों की शिक्षा का समावेश अनिवार्य रूप से होना चाहिये। हाईस्कूल की शिक्षा तक उन्हें बुराईयों, अपराधों के परिणामों के बारे में सजग करना चाहिए। मेरी समझ में अब तक ऐसी किसी पहल का श्रीगणेश भी नहीं हुआ है निकट भविष्य में संभावना कम ही दिखती है। जैसा चल रहा है, चलने दो। हमें क्या पड़ी है ? यही सोच आम आदमी की है और विद्वानों व संयासियों की भी।

चित्रों से सज्जा तथा प्रभाव

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

मानव प्राचीन काल से ही अपने आस पास के स्थान की सज्जा करता आया है। आदिवासी अपने आवास की दीवारों पर कला कृतियां बनाया करते थे। गांवों में मेले, त्यौहारों पर्वों या मांगलिक कार्यों से पूर्व घरों के द्वार पर भीति चित्र बनाये जाते थे तथा आंगन में रंगोली बनाई जाती थी। ये आड़ी तिरछी, गोल तिकोणी ज्यामितीय आकृतियां हुआ करती थीं यदि कुछ भी न बन सके तो हाथ या पांव के निशानों से सज्जा कर ली जाती थी। राजा तथा अन्य धनवान अच्छे चित्रकारों से सुन्दर कलाकृतियां बनवा कर दीवारों को सजाते थे। ये चित्र कपड़े या सियालकोटी कागज़ या दीवारों पर विशेष पलस्तर लगा कर बनाये जाते थे। रंग भी फूल पतों या वृक्ष की छाल से तैयार किये जाते थे।

समय के साथ इस क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। बाजार में चित्रों, पोस्टरों तथा कैलेण्डरों की भरमार है। फोटो फ्रेम या लेमिनेशन किये चित्र और भी सुन्दर लगते हैं। नये पक्के घरों और शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण अब हर एक अपने कमरों की सज्जावट अपने तरीके से करना चाहता है जिस में वह अपनी रूचियों का भी ध्यान रखता है। खेलों के शौकीन खिलाड़ियों के चित्र लगाना पसन्द करते हैं। फिल्मों के मतवाले अभिनेता तथा अभिनेत्रियों के चित्रों को अधिमान देते हैं। धार्मिक वृति वाले अपनी आस्था के अनुसार चित्र लगाते हैं। सरकारी कार्यालयों में राजनेताओं के चित्र लगाये जाते हैं। प्रकृति प्रेमी पहाड़, झील, जंगल, वन्य प्राणी आदि के चित्र हैं। सात्विक वृति के या निराकार को मनाने वाले सम्बन्धित चिन्ह लगा कर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं, चित्र लगाने का शौक घरों तक सीमित नहीं है। दुकानों, कार्यालयों, आटोरिक्शाा, बसों इत्यादि में भी चित्र टंगे होते हैं। उपहारों में मिले चित्रों को विशेष रूप में दीवारों पर स्थान दिया जाता है। नव वर्ष के आरम्भ में कई संस्थायें, कारखानेदार, दुकानदार कैलेण्डर विज्ञापन के लिये मुफ्त बांटते हैं। जो भी कैलेण्डर मिला उसे दीवार पर टांग दिया। इस प्रकार लगे कैलेण्डरों की भीड़ में सौन्दर्य ढूंढना पड़ता है। जिस से कैलेण्डर टांगने का उद्देश्य भी समाप्त हो जाता है। कुछ ऐसे भी शौकीन मिलेंगे जो कैलेण्डरों को एक बार टांग कर फिर उस ओर ध्यान ही नहीं देते।

पोस्टर, कैलेण्डर या चित्र लगाना अच्छी प्रवृति है। यह प्रवृति स्थान को सुन्दर तथा वातावरण को रंगीन बनाती है। मन को प्रसन्न करती है। आंखों में तरावट आती है। परन्तु यह सज्जावट उस व्यक्ति की रूचियों, झुकाव तथा भावनाओं पर भी प्रकाश डालती हैं। इस लिये चित्रों के टांगने से पूर्व यह जरूरी हो जाता है कि उस की गुणवत्ता की ओर भी ध्यान दिया जाये। सज्जा के साथ, यह भी देखना चाहिये कि इस का मन मस्तिष्क पर क्या प्रभाव होगा। किसी वस्तु को यदि बार–बार देखें, तो उस का मन मस्तिष्क पर जरूर प्रभाव होगा। भावनाओं की तरंगें उठती हैं और उनके अनुसार हमारा व्यक्तित्व का विकास होता है। एक श्वेत दम्पति के अश्वेत सन्तान उत्पन्न हुई। यह दम्पति हैरान तथा परेशान हुई। डी. एन. ए. टेस्ट में सन्तान दम्पति की ही थी। कारण ढूण्ढा गया। दम्पति फुटबाल खेल की दीवानी थी और उन्होंने अच्छे अश्वेत फुटबाल खिलाड़ी का चित्र कमरे की दीवार पर लगा रखा था। गर्भावस्था में इस चित्र को बार–बार देखने से उस के मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि काली सन्तान उत्पन्न हुई। इस से पता चलता है कि चित्रों का मन पर कितना गहरा असर होता है। चित्र लगाने से पूर्व स्थान, सज्जा तथा गुणवत्ता का ध्यान रखना चाहिये। ऐसे चित्र लगायें जिस से आप की छवि में निखार आये। चित्र और चरित्र का निकट का सम्बन्ध होता है। चित्रों से अच्छाई की प्ररेणा, आस्था को बल, स्थान को सौन्दर्य, भावना को आदर्श मिलना चाहिये तथा ज्ञान में वृद्धि होनी चाहिये। देश–भक्तों, महापुरूषों तथा प्रकृति से सम्बन्धित चित्रों को अधिमान दें। अभद्र, डरावने तथा फूहड़ चित्र नहीं लगाये जाने चाहिये। मन को प्रसन्न, जीवन को सहारा तथा छवि को पुष्ट करने वाले चित्र लगाये जाने चाहिये। चित्रों से सज्जा जरूर करें परन्तु स्थान तथा गुणवत्ता को ध्यान में रख कर।

''बलात्कार का शतप्रतिशत वैदिक समाधान''

♦आचार्य आर्यनरेश, उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल प्रदेश

ईश्वर का सर्वत्र विश्वास, फांसी का दण्ड व परस्पर भाई बहन बेटी की मानसिकता तथा बालीबुड की अश्लीलता पर लगाम। नारी विश्व जननी है, परमपिता परमात्मा ने वेद में ''स्त्री ही बहना बभूविय'' कहकर उसे अपने पश्चात् संसार का सर्वोच्च मान देते हुए बहना का स्थान दिया है, एवं अपने शरीर को ढक कर रखते हुए स्वगुणों के प्रकाश करने का उपदेश किया है। प्रथम विश्व मानव संविधान कर्त्ता 'महर्षिमन ने नारियों की मातृवत पूजा करते हुए दिव्य समाज के निर्माण की कामना की है। प्रसिद्ध सुराज्य निर्माता महामन्त्री चाणक्य मातृ शक्ति की पूजा व उन की लाज की सुरक्षा हेतु सदा सचेत रहने की शिक्षा देता है। चाणक्य नीति में महिलाओं की सुरक्षा हेतु लिखते हैं कि ''नष्ट निर्लज्जाश्च कुलाङ्गाः'' अर्थात् कुलीन नारियों की सुरक्षा का सबसे बड़ा साधन उन्हें अपनी लाज की सुरक्षा करना है। सूत्र १२६ में वे लिखते हैं कि योगी महाज्ञानी विरक्त लोग किसी नारी के शरीर को देखकर उसे मात्र मांस हड्डी का अपने शरीर के समान एक हाड–मांस का पिञ्जर ही समझते हैं परन्तु ऐसी दृष्टि सब की नहीं होती अतः उस अपने दिव्य शरीर को ढक कर रखना चाहिए। सच्चरित्र, समय व सुरक्षित राज संस्थापक चाणक्य नीति कहती है कि वीराङ्गना यदि लज्जा छोड़ देगी तो नष्ट हो जाएगी अर्थात् उसका धन्धा समाप्त हो जाएगा परन्तु कुलाङ्गना यदि लज्जा छोड़ देगी तो भी अपना सर्वस्व नष्ट कर लेगी। आचार्य 'चाणक्य' स्वरचित कौटिलय अर्थ शास्त्र में ''कुलीन धार्मिकी सुवस्त्रा'' नारियों को बुरी निगाह से बिना कुछ छेड़–छाड़ के केवल गलत ढ़ंग से छूने मात्र पर उस व्यक्ति का अंगूठा काटने का विधान करते हैं। परन्तु इस के साथ–साथ अकुलीन चंचल धर्महीन नारियों को मृत्युदण्ड व चरित्र ही पुरूषों को अग्नि पर बिछाये गए लोहे के पलंग पर जिन्दा जलाने का विधान भी आचार्य मनु करते हैं। एक बलात्कारी की अपनी माता–बहन अथवा पुत्री भी एक नारी ही होती है परन्तु वह प्रायः उनके साथ ऐसा नहीं करता क्योंकि उसके मन में वे मात्र 'स्त्री' नहीं एक माँ बहन व पुत्री का संस्कार रूपी स्थान रहता है। यह संस्कार ही उसे ऐसे कुकर्म से बचाता है परन्तु इसके न रहने पर वह पति तभी हो सकता है। समाज में बढ़ते बलात्कारों का सबसे बड़ा कारण नारियों के प्रति पुरूषों की नव निर्मित विकृत मानसिकता का संस्कार है जो पहले नहीं था। अत्यन्त दुःख का विषय है कि वर्तमान के समाज में लड़कियों का अन्य लड़कों के प्रति भाई आदि का रिश्ता नहीं एवं लड़कों व पुरूषों का उनके प्रति अपनी बहनों के समान रिश्ता नहीं। दोनों मात्र नर–नारी का मित्रता पूर्ण सम्बन्ध चाहते हैं। दुर्भाग्य का विषय है कि वर्तमान के सिनेमा अथवा सीरियल के कलाकारों ने भी नारी को समाज में पूज्या माँ बहन, व बेटी के रूप में स्थापित न करके पुरूषों के मस्तिष्क में चीज, जलेबी, शीलाबाई, हलकत जवानी, फेवीकोल व मुन्नी बदनाम के रूप में कुसंस्कारित कर के नारी के मान को तार–तार किया है क्या नारियों को उन का विरोध न करना चाहिए ?

एक नादान से नादान व्यक्ति भी यह जानता है कि अपने पैरों को कांटों से बचाने हेतु धरती पर चमड़ा बिछाने के असम्भव कार्य के स्थान पर जूता पहनना बुद्धिमता है। ठीक ऐसे ही एक थोड़ी सी भी बुद्धि रखने वाली शालीन कुलीन नारी जानती है कि अपने शील को बचाने हेतु संसार भर के पुरूषों को योगी बनाने के असम्भव कार्य के स्थान पर अपने शरीर को शालीनता से ढ़कना अत्यन्त सरल है। शक्ति विनाश के अश्लील विज्ञापन रोके जाएं। चाणक्य के कथन पर गंभीरता से विचार हो : १६ वर्ष की कन्या आयुर्वेद व ऋषिदयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश अनुसार विवाह के योग्य हैं, जो संयमी न रह सकें वे बिना डर के गृहस्थ में जाएं।

आर्य समाज कंडाघाट का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज कंडाघाट का वार्षिक उत्सव ११ मई से १४ मई २०१३ तक बडी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। मुझे इसके तीन सत्र देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस उत्सव को स्थानीय प्रधान श्री प्रबोध चन्द सूद जी एवं उनकी कार्यकारिणी के पदाधिकारियों ने बड़े उत्साह, हर्षोल्लास एवं अति व्यवस्थित ढंग से मनाया। प्रायः कई आर्य समाजों में उत्सव को औपचारिकता निभाने के लिए मनाया जाता है लेकिन यहां की व्यवस्था अद्भुत थी और कार्यक्रम प्रेरणाप्रद था। इसके लिए प्रधान एवं उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं। सभी आर्य समाजों को इससे सीख लेनी चाहिए। स्वामी विदेही योगी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, भजनोपदेशक तथा विद्यार्थियों ने बहुत ही अच्छे ढंग से जीवन उपयोगी सन्देश अति सरल भाषा में प्रेषित किया। एक दिन में प्रायः ६–१० घंटे का कार्यक्रम था, जिसका सभी श्रद्धालुओं ने पूरी तन्मयता से आध्यात्मिक कार्यक्रम का भरपूर आनन्द लिया। उपस्थिति भी अच्छी रही। आर्य समाज कंडाघाट का नव–निर्मित सत्संग भवन व यज्ञशाला देखने का अवसर मिला। अति सुन्दर निर्माण किया गया है, जिसके लिए पदाधिकारी प्रशंसा के पात्र हैं।

–योग प्रकाश नन्दा, संगठन मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश

रेल-डिब्बे में हुआ एक शास्त्रार्थ

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

एक बार आर्य समाज व मुसलमानों के मध्य शास्त्रार्थ होना निश्चित हुआ। आर्य समाज की ओर से स्व. स्वनामधन्य पं. रामचन्द्र देहलवी ने इस में वैदिक पक्ष रखना था तथा यह शास्त्रार्थ सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में होना था। शास्त्रार्थ से एक दिन पूर्व ही दिल्ली से सहारनपुर जाने वाली रेल गाड़ी में पं. जी बृहस्पतिवार को ही प्रस्थान कर गए। मार्ग में देवबन्द नामक रेलवे स्टेशन आता है। यहाँ पर मुसलमानों का एक प्रसिद्ध उपदेशक विद्यालय कार्यरत है। पं. जी की गाड़ी जब देवबन्द स्टेशन पर रुकी तो संयोगवश पं. जी वाले डिब्बे के ही बाहर बहुत से मुस्लिम बन्धु खड़े थे। उन्होंने अपने एक बन्धु को पुष्प मालाऐं पहनाकर उसी डिब्बे में चढ़ा दिया। शास्त्रार्थ–महारथी पं. श्री रामचन्द्र देहलवी इस दृश्य को देख रहे थे। मन–ही–मन उन्हें यह समझने में देर न लगी कि सहारनपुर में कल होने वाले शास्त्रार्थ में यह मेरा ही विपक्षी है। पं. जी को रेल–डिब्बे में बैठने वाले तथा उन्हें बिठाने आए किसी भी व्यक्ति ने नहीं पहचाना।

गाड़ी चलने लगी व पं. जी उस इस्लामी विद्वान् से बात करने का युक्तिं सोचने लगे जो संयोगवश उनके निकट ही बैठा था। कुछ सोचकर पं. जी ने उस विद्वान् से पूछा–

मौलवी जी! आपका तुआरुफ़ (परिचय) क्या है व आप कहाँ जा रहे हैं ?

"मैं देवबन्द उपदेशक विद्यालय का एक प्रशिक्षक हूँ व सहारनपुर में कल एक मुबाहसा (= शास्त्रार्थ) होना है। उसमें इस्लामी पक्ष मुझे रखना है।"

"यह शास्त्रार्थ किस पक्ष के साथ होना है तथा उस पक्ष के किस विद्वान् के साथ होना है ?"

"यह मुबाहसा (= शास्त्रार्थ) आर्य समाज के साथ होना है तथा सुना है कि कोई पं. रामचन्द्र देहलवी हैं, जिनसे मुझे मुबाहसा करना है।"

पं. जी इतनी बातचीत से आश्वस्त हो गए कि यह व्यक्ति मेरा ही बौद्धिक शिकार है व इसकी बौद्धिक परीक्षा यहीं पर लेनी चाहिए। थोड़े समय पश्चात् पं. जी ने पूछा–

"मौलवी साहिब! आज कौन–सा दिन है ?"

"आज जुम्म–ए–रात है।" स्मरणीय है कि वे लोग बृहस्पतिवार को जुम्म–ए–रात व शुक्रवार को जुम्मा कहते हैं।

"मौलवी साहिब! आज रात कौन–सी है ? मैंने यह नहीं पूछा था। आज दिन कौन–सा है ? मैंने तो यह पूछा था।

"हम आज के दिन को जुम्म–ए–रात ही मानते व कहते हैं।"

"मौलवी साहिब! यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है। आप आज के दिन का नाम बताओ।"

"आप का तुआरुफ़ (= परिचय) क्या है ?"

"इस बन्दे को लोग पं. रामचन्द्र देहलवी कहते हैं।"

यह सुनते ही वह इस्लामी विद्वान् मौन हो गया। उसने मन में क्या सोचा होगा, यह अनुमान पाठक स्वयं सहज ही लगा सकते हैं।

कुछ समय के पश्चात् जब आगामी रेलवे स्टेशन पर रेलगाड़ी रुकी तो वह विद्वान् डिब्बे से उतर गया। पं. जी बैठे देखते रहे व सहारनपुर का स्टेशन जब आया तो वे भी उतरे व आर्यसमाज मन्दिर में पहुँच गए।

आगामी दिन शास्त्रार्थ का निश्चित दिन शुक्रवार ही था। आर्यसमाज ने शास्त्रार्थ की तैयारी के रूप में मंच सजाया व उस पर पं. रामचन्द्र देहलवी जी को विराजमान कराया। इस्लामी पक्ष वाले लोग भी आ गए। पं. जी ने जब पूछा कि आप अपने पक्ष के विद्वान् को लाते क्यों नहीं तो उन्होंने कहा कि कल देवबन्द के स्टेशन पर रेलगाड़ी में हमारे विद्वान् को बड़ी शान से बिठाया तो गया था परन्तु पता नहीं, वे अब तक क्यों यहाँ नहीं पहुँचे।

पं. जी ने कल का सारा वृत्तान्त सुना दिया व कहा–कोई अन्य विद्वान् ले आओ।

"यह काम इतनी शीघ्रता में नहीं हो सकता।" यह कहकर वे लोग निराश होकर अपने घरों को लौट गए परन्तु शेष श्रोता व दर्शक "वैदिक धर्म की जय", "महर्षि दयानन्द की जय" व "पं. रामचन्द्र की जय" के नारे लगाते रहे।

इस प्रकार आर्य समाज ने वह शास्त्रार्थ जीत लिया जो सार्वजनिक तो न हुआ परन्तु जिसका वृत्तान्त सब ने सुना जो रेल के डिब्बे में दो विद्वानों के मध्य हुआ था।

आर्यसमाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव

शुक्रवार ७ जून से रविवार ६ जून २०१३ तक

निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर

(७ जून से ६ जून, प्रातः १०:३० से १२:३० बजे दोपहर तक)

पूज्यपाद आयुर्वेदाचार्य स्वामी सदानन्द जी द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य परिक्षण तथा रोगोपचार योग शिविर :

रविवार २ जून से रविवार ६ जून २०१३ तक

आप सभी को यह जानकर हर्ष होगा कि गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्यसमाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव शुक्रवार ७ जून से रविवार ६ जून २०१३ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। उत्सव में पूज्यपाद स्वामी सदानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब), श्री सतीश सुमन मुज़फरनगर (उ.प्र.) तथा श्री रामफल सिंह आर्य सुन्दरनगर अपने मुखारविन्द से वेदामृत वर्षा करेंगे। अतः आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि सपरिवार एवम् ईष्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाए तथा जीवन सफल बनाएं।

निवेदक : अशोक आनन्द, प्रधान, आर्य समाज कुल्लू

'समाज में महिला का स्थान'

♦प्रौमिला पटियाल, हिन्दी शिक्षिका, डी. ए. वी. हमीरपुर (हि. प्र.)

विधाता ने इस सतरंगी सृष्टि की रचना की है। ऊंचे–ऊंचे पर्वत, गहरे सागर, विशाल गगन लहलहाते खेत, चहकते पक्षी, फुदकते जीव–जन्तु, खिलते हुए फूल तथा रसपान करते हुए भौरे। इन सबका स्रष्टा ईश्वर ही है। प्रकृति और पुरूष इस विशाल सृष्टि के दो आधार हैं। एक–दूसरे के बिना दोनों अधूरे हैं, नीरस हैं। इसी प्रकार मानव समाज में स्त्री–पुरूष दोनों जीवन रथ को ढोने वाले दो चक्रों के समान हैं। इनसे ही सृष्टि का विकास हुआ है। नारी का इसमें विशेष स्थान है। इस बहुविध समाज में स्त्रियों का निश्चित स्थान रहा है तथा इनका महत्व अपने स्थान पर ऊंचा है।

नारी तेरे रूप अनेक कभी मेनका तो कभी राजा दुष्यंत की शंकुतला, कभी राधा रूकमणी तो कभी सीता, कभी माता–बहन तो कभी पत्नी के रूप में अपनी भूमिका निभाती चली आई है। वैदिक काल में तो नारियों को अति सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। कहा भी जाता है–'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'

हिन्दी साहित्य में नारी के अलग–अलग रूपों का वर्णन मिलता है, लेकिन हिन्दू समाज में स्त्रियों के स्वतंत्र रूप का वर्णन मिलता है। पुरूषों को धनोपार्जन का माध्यम माना जाता रहा है तथा स्त्रियाँ गृह कार्य में अपना आधिपत्य दर्शाती रही हैं। धार्मिक कार्यों में भी दोनों को समान रूप से सम्मिलित होना अनिवार्य माना जाता है। सांसारिक जीवन में भी स्त्रियों का स्थान बहुत ऊँचा है। स्त्री के बिना नर अधूरा है अतः उसका सम्मान करना चाहिए। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने भी कहा है "नारी खिलवाड़ की वस्तु नहीं और नाही उसकी उपेक्षा करनी चाहिए।" नारी को भी अपनी गरिमा बनाए रखनी चाहिए। वह शिक्षित हो या अशिक्षित किसी रूप में अपने शील व संकोच को तिलांजलि न दे। अपने परिवार के प्रति यथोचित व्यवहार कुशलता रखे तथा अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम रखे। इस प्रकार नारी गृह लक्ष्मी बनकर अपना, समाज व देश जाति का अधिक कल्याण कर सकती है।

महात्मा गान्धी के अनुसार : "नारी त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज़ शुद्ध व सही भावना से करती है, तब वह पहाड़ों को भी हिला देती है। मैंने स्त्री को सेवा और त्याग की भावना का अवतार मानकर उसकी पूजा की है।"

आजकल हर क्षेत्र में स्त्रियाँ पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। सामाजिक कर्त्तव्य के साथ–साथ उसे घर के प्रति भी अपनी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। अतः पुरूष का नारी के प्रति सम्मान तथा नारी की पुरूष के प्रति त्याग भी भावना ही दोनों के सम्बन्ध में उच्च मानवता प्रदान करती है। अन्यथा जीवन पशु तुल्य बन जाता है। इसलिए नारी को भी अपनी गरिमा बनाए रखने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

प्रेमचन्द के अनुसार–

"स्त्रियाँ केवल भोजन बनाने, बच्चे पालने, पति की सेवा करने और एकादशी का व्रत करने के लिए नहीं हैं। उनके जीवन का लक्ष्य बहुत ऊंचा है। वे मनुष्यों की समस्त सामाजिक और मानसिक विषयों में समान रूप से भाग लेने की अधिकारिणी हैं, उन्हें मनुष्य की भान्ति स्वतंत्र रहने का अधिकार भी प्राप्त है।"

अतः समाज में महिला को अपना सम्मानजनक स्थान बनाए रखने एवम् अपने आदर्शों को स्थापित करने हेतु अपने अधिकारों का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए। सच का रास्ता अपनाकर अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठानी चाहिए तथा सरकार द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा का अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए।

'यह जीवन अनमोल'

♦स्नेह कंवर, डी.ए.वी. हमीरपुर (हि.प्र.)

बहुत जरूरी होती है शिक्षा
सारे अवगुण धोती यह शिक्षा
चाहे जितना पढ़ लें हम
पर कभी न पूरी होती शिक्षा
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान
शिक्षा से ही बन सकता है
मेरा भारत देश महान्।

कभी मिले हार, तो कभी जीत
जिंदगी की ये, एक रीत
कभी हार के भी, जीत जाते हैं हम
कभी कुछ खोते, तो सब कुछ पाते हैं हम

अकर्मण्य आलसी के लिए समय
आराम ही आराम है
कर्मठ और पुरूषार्थी के लिए
समय पुरूषार्थ का दूजा नाम है

आओ अपना पहले लक्ष्य बनाएँ
फिर उसपर निरंतर बढते जाएँ
तभी एक दिन मंज़िल पाएँगे
सच्चे मन और जोश से
अपने क्षितिज को छू पाएँगे
नर में नारायण को पाएँगे
आंसू के छोटे दोहे में, पूरी रामायण को पढ़ पाऐंगे।

'नारी सशक्तिकरण'

♦आशिमा बनयाल, डी.ए.वी. हमीरपुर (हि.प्र.)

सरस्वती का रूप हो तुम, लक्ष्मी का स्वरूप हो तुम
बढ़ जाएं जब अत्याचारी दुर्गाकाली का रूप हो तुम।

भारत के जिस स्वर्णिम अतीत पर हम गर्व करते हैं उस का आधार क्या था ? हजारों वर्ष पूर्व जब कि विश्व के अधिकांश राष्ट्र जंगली अवस्था में थे भारत का ऋषि वैदिक रचनाएँ रच रहा था। जिस संस्कृति का निर्माण उन ऋषियों ने किया उस की महानता का आधार नारी जाति के प्रति सम्मान भी था। नारी को मातृशक्ति के रूप में हमारे यहाँ सबसे पहले पूजा गया। देवी सरस्वती को ज्ञान और विद्या की देवी स्वीकार किया गया तो लक्ष्मी को धन–धान्य देने वाली माना गया। शक्ति के रूप में दुर्गा की प्रतिष्ठा हुई। जीवन में जो कुछ शुभ सुन्दर, कोमल, उपयोगी और जीवनदायी था, उसकी कल्पना हमारे यहाँ नारी रूप में ही की गई।

फिर भारत में महाकाव्यों का युग आया जिसमें नारी का स्थान क्रमशः गिरता दिखाई पड़ता है। दहेज प्रथा के भी संकेत मिले। राजपूत युग में तो नारी की अवमानना और भी अधिक बढ़ गई। इस युग का आदर्श बना–

'जा की बेटी सुन्दर देखी, ता घर जाय धरी तलवार।'

अंग्रेज़ी शासनकाल में, राजाराम मोहनराय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, केशव चन्द्र सेन तथा स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरूषों ने नारी मुक्ति का जयघोष किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक परम्पराओं के अनुरूप नारी शिक्षा को महत्वपूर्ण माना। भारतीय राजनीति में क्रांतिकारी दल में काम करने वाली युवतियों ने अपने साहसी कार्यों से सिद्ध किया कि वे देशभक्ति और बलिदान की भावना में पुरूषों से पीछे नहीं हैं।

स्वतन्त्र भारत में नारी ने विकास की अनेक मंजिलें पार की है। शिक्षा ने स्त्री की परिभाषा ही बदलकर रख दी है। पहले स्त्री को अबला माना जाता था। पर आज की नारी अबला नहीं है। हर क्षेत्र में उसने झंडे गाड़ दिए हैं। हर क्षेत्र में उसकी योग्यता को सराहा जाता है। नौकरी के साथ आज वह अपना परिवार भी अच्छी तरह से संभाल रही है। बीते समय में स्त्री का घर से निकलकर नौकरी करना बुरा माना जाता था। लेकिन जबसे वह शिक्षित हुई है, उसने इस धारणा को खण्ड–खण्ड कर दिया है। आज वह किसी पर आश्रित नहीं है। नौकरी ने उसके अस्तित्व का सम्मान और गौरव दिया है। आज वह पुरूष के कन्धे से कन्धा मिला कर जीवन के हर क्षेत्र में राष्ट्र निर्माण के कार्य में जुटी है। कोई व्यवसाय अब उसके लिए अछूत नहीं रहा। आज की नारी धार्मिक रूढियों से मुक्त हो अपने अस्तित्व की सार्थकता समाजोपयोगी कार्यों में ढूंढ रही है। जय शंकर प्रसाद जी के शब्दों में :

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पगतल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के उर्वर आँगन में।

आर्य समाज मण्डी की कार्यकारिणी

आर्य समाज मण्डी का वार्षिक चुनाव २४–०३–२०१३ को श्री रतन लाल वैद्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए जिसमें सुरेश टन्डन को सर्वसम्मति से प्रधान व श्री हरीश चन्द्र बैहल को मन्त्री चुना गया तथा कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा के गठन का अधिकार दिया गया इसके अनुसार निम्नलिखित कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा का गठन किया गया।

संरक्षक :
१. श्री रोशन लाल बैहल
२. श्री रतन लाल वैद्य
३. श्री माधो प्रसाद वैद्य
४. श्री किशोरी लाल गोयल

कार्यकारिणी :
१. श्री सुरेश टण्डन (प्रधान)
२. श्री देवी चन्द कपूर (वरिष्ठ उप–प्रधान)
३. श्री हरीश चन्द्र बैहल (मन्त्री)
४. श्री गजेन्द्र कपूर (उप मन्त्री)
५. श्री वेद मित्र शर्मा (प्रचार मन्त्री)
६. श्री खेम सिंह सेन (कोषाध्यक्ष)
७. श्री दीनानाथ वैद्य (लेखा परीक्षक)

अन्तरंग :
१. श्री अमृत लाल बैहल
२. श्री हर गोपाल कपूर
३. श्री जगदीश वैद्य
४. श्री देव राज आर्य
५. श्री भूपिन्द्र पाल मल्होत्रा
६. श्री अशोक भारती
७. श्री भूपिन्द्र लोहिया
८. श्रीमती विद्यावती वैद्य
९. श्रीमती राजकुमारी हाण्डा
१०. श्रीमती सरस्वती कपूर
११. श्रीमती गोमती लोहिया
१२. श्रीमती सरला बैहल
१३. श्रीमती दयावन्ती बैहल
१४. श्रीमती अनिता कुमारी लोहिया
१५. श्रीमती सावित्री आनन्द
१६. श्री नवीन वैद्य
१७. श्री देवेन्द्र नाथ वैद्य

–प्रधान, आर्य समाज मण्डी

'आयुर्वेद और स्वास्थ्य'

♦सुधा सूद, डी.ए.वी. हमीरपुर (हि.प्र.)

सुन्दर स्वस्थ एवं शक्तिशाली शरीर सर्वोत्तम सम्पति है। स्वस्थ शरीर का निर्माण हमारे भोजन पर निर्भर करता है। भोजन प्रसन्न मुद्रा एवं आराम से खाना चाहिए। इससे आलस्य नहीं आता है। शरीर स्वस्थ तथा चुस्त और फुर्तीला रहता है। इसके साथ ही घर में पाए जाने वाले कुछ खाद्य पदार्थ शरीर को रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करते हैं। इनमें से आँवला, नीम, अंगूर आदि का वर्णन नीचे दिया गया है।

आँवला : आँवले में सारे रोगों को दूर करने की शक्ति है। आँवला युवकों को यौवन प्रदान करता है और बूढ़ों को युवा जैसी शक्ति। गर्मियों में चक्कर आते हों, जी घबराता हो तो आँवले का शरबत पीयें। आँवले से विटामिन 'सी' सर्वाधिक होता है। एक आँवला, दो सन्तरे के बराबर होता है। आँवले का मुरब्बा ताकत देने वाला होता है। रात को सोते समय दस ग्राम आँवले का चूर्ण पच्चीस ग्राम शहद में मिला कर लेना चाहिए। आँवले का मुरब्बा स्मरण शक्ति बढ़ाने में रामबाण है। आँवले का चूर्ण मूली के साथ खाने से मूत्राशय की पथेरी में लाभ होता है।

अंगूर : अंगूर स्वस्थ मनुष्यों के लिए पौष्टिक भोजन है और रोगी के लिए शक्तिप्रद पथ्य। भोजन के रूप में अंगूर कैंसर, क्षयरोग, पायोरिया, ऐपेण्डीसाइटीस, फ़िटस, रक्त विकार अमाशय में घाव आदि में दिया जाता। अंगूर का रस एक कप नित्य प्रातः सूर्य निकलने से पहले पीने से आधे सिर का दर्द ठीक हो जाता है। मीठे अंगूर का रस नाक से खींचने से नकसीर तुरन्त बन्द हो जाती है। फेंफड़ों के सभी प्रकार के रोग खांसी जुकाम, दमा आदि के लिए अंगूर बहुत अच्छा है।

नीम : नीम रक्त साफ़ करता है। दाद, खाज, ब्लडप्रेशर में प्रातः २५ ग्राम नीम की पत्ती का रस लेना लाभदायक है नीम के पत्तों का रस रक्त साफ़ करता है। नीम के पत्ते कीड़े मारते हैं; इसलिए इसके पत्तों को अनाज़, कपड़ों में रखते हैं। नीम का तेल नाना प्रकार के चर्म, जख्म, कुष्ट में लाभदायक है। सिर में बाल उड़कर चकते होने पर दो तीन महीने नीम का तेल लगाने से बाल उग आते हैं। नीम की निवोली पीसकर सिर में लगाने से बालों का झड़ना रूक जाता है।

नीम के पत्तों की राख का एक चम्मच ठण्डे पानी से तीन बार खाने से कुछ ही दिनों में किडनी बलैडर की पथरी गलकर निकल जाती है। कान दर्द तथा कान में घाव हो तो नीम के पत्ते पानी में उबाले और इसकी उठने वाली भाप पर कान सेकें, लाभ होगा।

पेट की वायु (गैस) : लम्बे सांस–भोजन के बाद सीधे लेट कर आठ लम्बे सांस लें फिर दाहिने करवट लेट कर सोलह लम्बे सांस लें और अन्त में बायीं करवट लेकर बत्तीस लम्बें सांस लें। इस क्रिया से किया हुआ भोजन यथास्थान पहुँच जाता है और वायु मुंह से डकार के रूप में निकल जाती है। इस नुस्खे को अपनाकर गैस से बचे रहें।

कैन्सर–भोजन : निरन्तर चल रहे शोध से ज्ञात हुआ है कि भोजन में पाया जाने वाल रसायन 'बीटा केटोरीन' कैंसर को नष्ट कर देता है। 'बीटा केटोरीन' साबुत दालें, पत्तागोभी, फूलगोभी, गाजर, नींबू, मौसमी फलों में बहुतापत में मिलता है।

'डी.ए.वी. का परिचय'

♦भागीरथी सिंघा, पी.जी.टी., डी. ए. वी. हमीरपुर (हि. प्र.)

डी.ए.वी. किसी परिचय का मोहताज नहीं,
यहीं तो होता है, शिक्षा व धर्म का विकास सही।
यह अस्तित्व में है तब आया,
जब ईसाई धर्म था छाया।
इसी अवसर पर महात्मा हंसराज जी आ धमके,
करने हिन्द की रक्षा, एक मसीहा बनके!
भारतवासियों को करने आगाह,
सबसे पहिले शिक्षा का किया सही प्रवाह।
शिक्षा बनाती है भविष्य देश का,
उसी से होता है उजागर, ज्ञान देश का।
नींव रखी गई डी.ए.वी. स्कूल की सन् १८८६ में,
दयानन्द एंग्लो वैदिक बना सर्वप्रथम भारत में।
वेद व अंग्रेज़ी भाषा का है इसमें समावेश,
धर्म व संस्कृति को उठाना है इस संस्था का निर्देश।
यहाँ पर धर्म शिक्षक देते हैं धर्म का उपदेश,
संस्कृत के अध्यापक करते हैं भाषा का निवेश।
यहाँ पर होता है बच्चों का बहुमुखी विकास,
आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ अनिवार्य है वेदों का पाठ।
हवन और यज्ञ से, कार्य होते हैं यहाँ आरम्भ,
हर डी.ए.वी. में यज्ञशाला का है उचित प्रबन्ध।
आओ हम महात्मा हंस राज व दयानन्द के संदेश आगे बढ़ाऐं
डी.ए.वी. का नाम पूरे विश्व में ऊँचा उठाएँ।
जय भारत जय डी. ए. वी. !

प्रदूषण की समस्या

♦आशा चौहान, डी. ए. वी. हमीरपुर (हि. प्र.)

वायु, मिट्टी, जल, वृक्ष और पशु आदि को मिलकर पर्यावरण में एक सन्तुलन स्थापित करते हैं। प्राकृतिक एवं मानवीय कारणों से यह सन्तुलन अनेक बार खतरे में पड़ जाता है। पर्यावरण के प्रति भारतीय दृष्टि प्राचीनकाल से ही सचेत रही है। हमारे यहाँ आकाश, पृथ्वी, पर्वत, नदी सागर तथा वन–वनस्पति और औषधियाँ सभी देव वंदनीय होकर प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध जोड़ती हैं। वनस्पतियों को पवित्र एवं भौगोलिक दृष्टि से शुभ अवसरों पर उनका उपयोग कर उनको पूजा का विधान रखा गया। हमारा जीवन विज्ञान के द्वारा परिचालित है। सुख–सुविधाओं के साथ–साथ अनेक हानियाँ भी विज्ञान की देन हैं। विषैली गैस, धूल, धुआँ, मिट्टी जीवाणु आदि वायु में मिलकर फेफड़ों में प्रवेश करके श्वास सम्बन्धी रोग, बढ़ा रहे हैं। वायुमंडल में ऑक्सीजन की कमी हो रही है। नदियाँ, रासायनों के कारण प्रदूषित ही रही हैं। ध्वनि प्रदूषण रक्तचाप और हृदय गति में वृद्धि कर रहा है। नगरों में आधुनिक फ्लश शौचालयों की गंदगी नदियों में बहाई जा रहा है। विभिन्न देश परमाणु विस्फोट से सैन्य बल प्रदर्शन करके वातावरण को दूषित कर रहे हैं। समय की मांग है कि इन समस्याओं का शीघ्र ही समाधान करना आवश्यक है अन्यथा आने वाली पीढ़ियों को नदी–नाले, वृक्ष, पशु–पक्षी केवल पुस्तकों में ही देखने को मिलेंगे। जन–जागरण के कार्यक्रम नदियों को स्वच्छ करने के अभियान वनों के संरक्षक के उपाय शीघ्र ही सीचने पड़ेंगे। विद्यालयों में विद्यार्थियों को स्वच्छता का महत्व सिखाना होगा। कड़े दंडों का प्रावधान और वन संरक्षण करने पर प्रौत्साहन देना उचित कदम होंगे। हमारा कर्तव्य है कि हम पृथ्वी को प्रदूषण से बचाए रखें। हम कदापि नहीं भूल सकते कि हमारी संस्कृति हमारी माँ है और इसकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य।

'इन्सान'

♦विजय शर्मा, डी.ए.वी. हमीरपुर (हि.प्र.)

क्या लेकर आया था, क्या लेकर जायेगा
आखिरकार एक गज ज़मीन में
कुछ लकड़ियों के साथ जलाया जायेगा!
जो मिला उसी में खुश रह, देने का कभी गम न कर,
सिर्फ तेरा कर्म ही तेरे साथ जायेगा!
सुख दुःख, मोह माया दुनिया का दस्तूर है सब,
अन्त में सब कुछ भूल जायेगा,
तेरा किया भी याद नहीं आयेगा!
अकेला आया है, अकेला ही जायेगा
फिर क्या अपना और क्या पराया
तेरे बाद यह दुनिया झूठे आँसू बहायेगी
और बाद में सब कुछ भूल जायेगी!
दो पल का यह तेरा जीवन दोपल की इसकी कहानी,
अन्त में न तू रहेगा और न ही तेरी यह ज़िन्दगानी!
भूला है हर कोई न होगा यह जग तुझ पे कुर्बान,
मेरी नज़र में ऐसा है इन्सान!

पाश्चात्य प्रभाव

♦पी.सी. वर्मा प्राचार्य, डी. ए. वी. हमीरपुर (हि. प्र.)

कोई भी वस्तु, व्यक्ति, स्थान यदि विदेशी है तो उत्तम है, यदि स्वदेशी है तो निकृष्ट है।

यह इस कहावत को सिद्ध करता है कि घर का जोगी जोगड़ा, बाहर का जोगी सिद्ध। हमारी मानसिकता ही ऐसी विकसित हुई है और यही हमारी आत्महीनता का कारण रहा है।

वर्तमान में तो इसकी पराकाष्ठा हो गई है। विदेशी ब्रांडों से बाजार भरे पड़े हैं। चाहे कपड़े हों या जूते। यहाँ तक की हमारे त्योहार मनाने का सामान व विधि भी विदेशी हो गई है। इतना तो काफी था, परन्तु हम इससे भी आगे बढ़कर उत्सव भी विदेशी मनाने लग गये हैं। इसका मूल कारण है हमारे प्रचार माध्यम जो केवल और केवल विदेशी उद्योगपत्तियों के बनाऐ गये उत्पादनों के झूठ–सच्चे गुणगान कर उनके उपयोग के लिऐ हमें बाध्य कर देते हैं। इतना धन इस महिमागान में लगाया जाता है जितना तो एक सामान्य व्यापारी अपने उद्योग लगाने में लगाता है। यह गला काटू प्रतिस्पर्धा इतनी हो गई है कि आम व्यक्ति के लिए उद्योग लगाने के बारे में सोचना भी दूभर हो गया है। इसके उपर सरकार FDI का भूत और ला रही है। चारों और पाश्चात्य का ही बोलबाला है। होगा भी क्यों नहीं, हमारी प्रकृति भी पश्चिमी विक्षोम के आदेशों पर चल रही है। परिणाम स्वरूप मई के महीने में बर्फ और बरसात हमारे सामने है।

यह हमारे लिए चेतावनी मात्र है। मानव द्वारा किऐ गये अभूतपूर्व परिवर्तन उसके अपने लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं।

कहने का तात्पर्य है, पश्चिम का आंख बन्द कर अनुसरण, अनुमोदन करना। प्रकृति का अपनी आवश्यकता से अधिक दोहन करना एक चिन्तनीय विषय है।

हमारा भारत महान् था एक सोने की चिड़िया थी और विदेशी हमारा अनुसरण करते थे। अब हममें क्या कमी आ गई है। क्या हम अभी भी पराधीन मानसिकता नहीं छोड़ पाये हैं।

हमें गर्व होना चाहिए कि हम इस महान् देश, भारत में पैदा हुऐ हैं।

(बोध कथा)

तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!

♦रणवीर को फाँसी के दण्ड की आज्ञा हुई। सैशन जज ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा–"इसे गले में रस्सी डालकर तब तक लटकाए रखो, जब तक प्राण न निकल जायें।" एक कोलाहल मच गया हर ओर। लोग सहानुभूति के लिए मेरे पास आने लगे–रोनी सूरत बनाकर, उदास चेहरा लेकर। कभी–कभी आँखों में आँसू भरकर वे मेरे पास आते। मुझे हँसता हुआ देखकर आश्चर्य से कहते, "तेरी छाती में हृदय है या पत्थर ? तेरे पुत्र को फाँसी की आज्ञा हो गई, उसकी मृत्यु उसके समक्ष खड़ी है और तू अब भी हँसता है ?"

तब मैं गम्भीरता से कहता–"मुझे अपने ईश्वर पर विश्वास है यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा रणवीर मेरे पास आ जाय तो संसार की कोई शक्ति उसे मार नहीं सकती और यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि वह मेरे पास न आये तो फिर संसार की कोई शक्ति उसे बचा नहीं सकती। तब मैं रोऊँ किसलिए ?"

तुम्हारी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

♦महर्षि दयानन्द अन्तिम साँस ले रहे थे। सारे शरीर में दर्द था। लोग अशांत थे कि कब क्या होगा ? उनके मुखमण्डलों पर उदासी थी, आँखों में आँसू। महर्षि ने मुस्कराते हुए कहा–"कौन–सी तिथि है आज ? कौन–सी घड़ी है इस समय ? पास खड़े एक व्यक्ति ने बताया कि तिथि कौन–सी है, समय क्या हुआ है ?

महर्षि बोले–"तो अब खिड़कियों को खोल दो! बाहर की वायु को आने दो। पंछी का मार्ग न रोको। मेरे पीछे आ जाओ सब लोग। गायत्री मंत्र का जाप करो" और जब सब लोग जाप कर रहे थे तो महर्षि ने अन्तिम साँस लेते हुए कहा–"तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभो!" इसके अतिरिक्त दूसरी कोई प्रार्थना नहीं की, कोई दूसरी याचना नहीं की।

राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।
याँ यूँ भी वाह वा है, और वूँ भी वाह वा है।।

'उत्तम सुख'

♦अंजलि ठाकुर, हिन्दी अध्यापिका,
डी. ए. वी. हमीरपुर (हि. प्र.)

उत्तम सुख निरोगी काया
जो यह रहस्य जान पाया
उसने योग को अपनाया और
बीमारी को दूर भगाया।।

दूजा सुख है अद्‌भुत माया
जिसने भी है इसको पाया
सबने उसके आगे शीश नवाया और
वही धनवान कहलाया।

घर में जिसके लक्ष्मी आई
उसको नहीं कोई कठिनाई
सही तरीके से करना ख़र्च
फिर नहीं लेना पड़ेगा कर्ज़।

तीजा सुख है कुलवंती नारी
हम हैं उसके सदा आभारी
न करती वो त्याग और बलिदान
घर न बनता स्वर्ग समान।

बच्चे हों जिसके आज्ञाकारी
दुनिया लगे उसको न्यारी
घर में ही उसके स्वर्ग समाया
कोई दुख न पास आया।।

करनी-भरनी

हम जैसा बोते हैं वैसा ही काटते हैं। आलू की बिजाई के उपरान्त आलू की ही फसल होगी, उसमें टमाटर, फूल गोभी या कदू आदि निकल कर स्वतः नहीं आ जायेंगे। अतः जैसा भी हम बोयेंगे वैसा ही काटेंगे। यह तथ्य अकाट्य और तर्कपूर्ण है। जीवन में भी यही बात चरितार्थ होती है। यदि हम सुकृत्यों संस्कारों और सुविचारों के बीज बोयेंगे तो हमारे चारों और का वातावरण संस्कारित, सुव्यवस्थित होगा। वहाँ सुख शान्ति और सुगन्धी का साम्राज्य होगा। हमारी घर गृहस्थी सुन्दर और सुखी होगी। हमारा जीवन तनाव मुक्त और चिन्तन युक्त होगा। हम अन्धविश्वास और आडम्बरों में न फंसकर सात्विक जीवन व्यतीत करेंगे। सुविचार हमें ऊर्जा देते हैं और कुविचार हमारे जीवन की फुलवाड़ी का सत्यानाश कर देते हैं। कुविचारों की आंधी चलने से जीवन का बसन्त पतझड़ और अमावस्या में बदल जाता है। हम इस पृथ्वी में ही सुकृत्यों और सुविचारों के बीज बोकर स्वर्ग सुख की अनुभूति अपनी गृहस्थी में रहकर अनुभव कर सकते हैं। आर्य समाज के प्रवर्तक महान् समाज सुधारक ऋषिवर दयानन्द के अनुसार सुख विशेष ही स्वर्ग और दुःख विशेष ही नरक है। स्वर्ग और नरक हमारे घर–द्वार हैं। जहाँ पवित्र आत्मायें वेद की आज्ञाओं का पालन करती हुई सुख–शान्ति से जीवन यात्रा करती हैं और जहाँ पति–पत्नी एक दूसरे का आदर करते हों तथा जीवन के सुख–दुःख, बसन्त–पतझड़ तथा धूप और छाया में कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करते हों वह घर स्वर्ग है। जहाँ अनैतिकता, अनाचार, कुविचार और कुसंस्कारों की हवा हर घड़ी और हर पल चलती रहती है वह घर नरक तुल्य है। स्वयं मनु महाराज कहते हैं कि जहां पति–पत्नी परस्पर सन्तुष्ट रहते हैं, दोनों एक–दूसरे का सम्मान करके कन्धे से कन्धा मिलाकर दुःख–सुख का उपभोग करते हैं। श्री राम स्वयं स्वर्ग के बारे में कवि के शब्दों में कहते है।

मैं नहीं स्वर्ग का सन्देश यहाँ पर लाया,
इस भूतल को स्वर्ग बनाने आया।

–सम्पादक

संघ चुनाव समाचार

<u>प्रदेश स्तरीय</u> : हिमाचल पैंशनर्ज कल्याण संघ का प्रदेश स्तरीय द्विवार्षिक चुनाव ८ जून को प्रातः ११ बजे पालमपुर में होगा। सभी जिलों से भारी संख्या में प्रदेश प्रतिनिधि वर्ष २०१३–१५ की कार्यकारिणी का नवगठन करेंगे।

<u>जिला मण्डी</u> : हिमाचल पैंशनर्ज कल्याण संघ जिला मण्डी का द्विवार्षिक चुनाव रैस्ट हाउस वासा गोहर खण्ड में १६ मई २०१३ को सम्पन्न हुआ जिसमें प्रदेश पर्यवेक्षक योग राज शर्मा ने भाग लिया। सर्व सम्मति से कृष्ण चन्द आर्य को छठी बार जिला मण्डी का प्रधान चुना गया। इसके अतिरिक्त श्री भक्त राम आज़ाद को महा मन्त्री और जय राम वर्मा को कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से चुना गया। सदन द्वारा प्रधान, सचिव एवं कोषाध्यक्ष की मन्त्रणा से कमेटी के अन्य सदस्यों को मनोनीत करने का अधिकार दिया। आपसी मन्त्रणा से प्रधान कृष्ण चन्द आर्य ने कमेटी का नव गठन इस प्रकार कर दिया। संरक्षक आई. डी. प्रेमी, धर्मपुर, प्रभु राम, डैहर, मुख्य सलाहाकार ठाकुर हरि सिंह हरिपुर, सलाहकार खेम चन्द ठाकुर बल्ह, वरिष्ठ उप–प्रधान हिम्मत राम धर्मपुर, लाल मन शर्मा बल्ह, उपप्रधान गिरिजा गौतम सुन्दरनगर, वृज लाल चच्चोट, कोषाध्यक्ष जय राम वर्मा नाचन, संयुक्त सचिव रमण कुमार गुप्ता हरिपुर, सह सचिव लालमन त्यागी चच्चोट, मुख्य संगठन सचिव शम्भू राम जोगिन्दरनगर, संगठन सचिव वाम देव कश्यप, ग्याहरू राम चच्चोट, प्रैस सचिव कलिया राम पंडयार डैहर, मनोज कुमार द्रंग, प्रचार सचिव ऊषा कालरा, लेखा निरीक्षक पदमनाभ शर्मा सुन्दरनगर, अच्छर सिंह बल्ह, अन्तरंग सदस्य चन्द्र सिंह ठाकुर सराज, बसन्त सिंह चाम्बी, गायत्री शर्मा सुन्दरनगर, निर्मला शर्मा चच्चोट, नर्वदा गुप्ता सुन्दरनगर।

–कृष्ण चन्द आर्य, जिला प्रधान

<u>खंड सुन्दरनगर</u> : हि. पै. क. संघ खण्ड सुन्दरनगर का द्विवार्षिक चुनाव १० मई २०१३ को आनन्द धाम वृद्धाश्रम में सम्पन्न हुआ। सुन्दरनगर ब्लाक के सभी पैंशनरों ने जिन में महिला पैंशनर भी शामिल थीं ने चुनाव प्रक्रिया में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए जिला कार्यकारिणी की ओर से प्रदेश प्रचार सचिव ठाकुर हरि सिंह को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया था। मान्य पर्यवेक्षक महोदय ने स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष रूप से चुनाव सम्पन्न करवाये। खण्ड सुन्दरनगर के सभी पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ। जिनमें प्रधान–श्री मोहन सिंह वर्मा, सचिव–श्री विनोद स्वरूप, कोषाध्यक्ष–श्रीमति सुमित्रा देवी एवं वरिष्ठ उपप्रधान–श्री दिला राम शर्मा को चुना गया। पर्यवेक्षक महोदय ने उक्त चारों नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कार्यकारिणी के अन्य पदाधिकारियों को मनोनीत करने के लिए अधिकृत किया। खण्ड सुन्दरनगर की कार्यकारिणी में नीचे लिखे पदाधिकारियों को सर्वसम्मति से मनोनीत किया गया : मुख्य संरक्षक–श्री

ठाकुर हरि सिंह
पूर्व डी. एफ. ओ.,
मुख्य सलाहकार,
हि.पैं.क.संघ, जिला मण्डी

कृष्ण चन्द आर्य, संरक्षक–श्रीमति गिरिजा गौतम, उपप्रधान श्री मान सिंह ठाकुर, श्री प्रभु राम, संयुक्त सचिव–श्रीमति निर्मल शर्मा, श्री निकू राम, संगठन सचिव–श्री पोहलो राम, श्री हरि सिंह चौधरी, प्रैस सचिव–श्री कलिया राम, लेखा निरीक्षक–श्री जय राम वर्मा, श्री हरि सिंह ठाकुर, अन्तरंग सदस्य–श्रीमती गायत्री देवी, श्रीमती इन्दिरा, श्री रमन कुमार गुप्ता, श्री नरपत राम, श्री धनीराम पूर्व पी.ई.टी., श्री बालक राम, श्री मोहन लाल वालिया, श्री माया राम, श्री लक्षमण सिंह। जिला महासचिव श्री भगत राम आजाद ने उक्त नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को संघ के प्रति निष्ठा बनाये रखने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर प्रीति भोज का आयोजन भी किया गया था, सभी पैंशनरों ने सुस्वादु मण्डयाली धाम का आनन्द लिया।

–सचिव, सुन्दरनगर

सुन्दरनगर के सर्वश्रेष्ठ किसान
परमा राम

श्री परमा राम

हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय व प्रदेश के कृषि विभाग द्वारा पालमपुर में आयोजित राज्य स्तरीय किसान मेले व प्रगतिशील किसान मिलन कार्यक्रम में सुन्दरनगर के छातर गांव के किसान परमा राम ने सर्वश्रेष्ठ किसान ट्रॉफी जीत कर उपलब्धि हासिल की है। इस किसान मेले में राज्य स्तर पर ६ किसानों के पुरस्कृत किया गया जिनमें परमा राम भी शामिल हैं। गौरतलब है कि परमा राम ने फौज से सेवानिवृत्त होने के उपरांत खेती–बाड़ी को अपनाया। जहां किसान अपने खेत में रासायनिक खादों का इस्तेमाल करते हैं, वहीं परमा राम जैविक खेती करते हैं। परमा राम ने खेती को आसान करने के लिए कई औजारों तथा स्कूटर हल का निर्माण भी किया है जिसका वह कई कृषि आयोजनों व मेलों में प्रदर्शन कर चुके हैं और प्रदेश स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उनसे खेती–बाड़ी के गुर सीखने के लिए प्रदेश भर से किसान व कृषि विभाग के अधिकारी उनके पास पहुंचते हैं। उल्लेखनीय है कि परमा राम को केन्द्रीय कृषि मंत्री शरद पवार के हाथों भी राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार व सम्मान मिल चुका है।

सौजन्य : पंजाब केसरी

हमें श्री परमा राम पर गर्व है। वे अपनी नेक कमाई का भाग प्रतिवर्ष अनाथालय और वृद्ध आश्रमों में देते रहते है। वे अत्यन्त सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। उन्होंने जीवन में उच्च आदर्श अपनाये हैं। परिश्रम ही ईश्वर है ऐसा उनका विश्वास है।

–सम्पादक

ऋग्वेद

स्वामी सर्वानन्द

महर्षि दयानन्द

यजुर्वेद

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यों के तीर्थ

दयानन्द मठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब) को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्टूबर, 2013

को बड़ी धूम–धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा।
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती

अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क : 01875–220110, 094782–56272, 94172–20110

सामवेद

अथर्ववेद

साभार

प्रधान, आर्य समाज नगरोटा वगवां, तह. व जिला कांगड़ा ने ₹ १५११, श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (म. प्र.) ने ₹ ५००, प्रधान आर्य समाज नूरपुर, जिला कांगड़ा ने ₹ ५००, श्रीमति नीलम शर्मा प्रधान आर्य समाज डलहौज़ी (चम्बा) ने ₹ २००, श्री सत्यप्रकाश शर्मा एस–४/७२ बी. बी. एम. बी. कालौनी, सुन्दरनगर ने ₹ २००, श्री नरेश काम्बोज एस–४/१२७ बी. बी. एम. बी. कालौनी सुन्दरनगर ने ₹ २००, श्रीमति गोमती लोहिया म. न. २५/६ लोअर समखेतर मण्डी ने ₹ २००, श्रीमति सरला बहल म. न. १५४/८ चौहट्टा बाजार मण्डी ने ₹ २००, श्री कर्म चन्द गौतम एडवोकेट प्रधान आर्य समाज नालागढ़ जिला सोलन ने ₹ २००, श्री हरि सिंह नेगी पूर्व शास्त्री बंजार जिला कुल्लू ने ₹ २००, श्री हेम चन्द शर्मा पूर्व प्रधानाचार्य गांव व डा. कुम्मी जिला मण्डी ने ₹ २०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिंतकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹ 100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

१. आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०)
२. उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. :- MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

सेवा में

बुक पोस्ट

'मैं हूँ नारी शक्तिशाली।'

♦आशिमा बन्याल, टी. जी. टी., डी. ए. वी. हमीरपुर (हि. प्र.)

पहचाना मुझे ..... ?
नहीं! .....
तो फिर पहचान लो,
मैं नारी हूँ,
मुझसे श्रेष्ठ कौन ?
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

सरस्वती हूँ विद्या देने के लिए,
वायु हूँ, जीवन देती हूँ,
ज्योति भी हूँ, प्रकाश फैलाती हूँ,
माटी हूँ मैं,
क्योंकि मैं माँ हूँ।
मैं नारी हूँ शक्तिशाली।

गोद में खिलाकर नन्हे–मुन्ने को
इन्सान बनाती हूँ,
मेरे बिना, सब कुछ रहने पर भी,
कुछ नहीं रहता।
मुझसे श्रेष्ठ कौन ?
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह
टैगोर, गान्धी व विनोवा जी,
सबको दिया ज्ञान,
स्वाधीनता व समाज सेवा का।
मुझसे श्रेष्ठ कौन ?
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

पापा की दुलारी हूँ मैं,
पति की हूँ प्रिया,
पुत्र की जननी हूँ मैं।
समाज को देती हूँ दिशा
मुझसे श्रेष्ठ कौन ?
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

घर की स्वामिनी हूँ मैं,
कर्म क्षेत्र मेरा
घर के अन्दर है,
और बाहर भी।
मैं काम न करूं,
पूरा जग रूक जाए।
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

बिगुल बजाता है, पुरूष
प्रधान होने का
डराना चाहता है मुझे,
पर विवश हो जाता है
मुझे सुनने के लिए।
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

पुरूष हिंसक हो जाता है जब,
होती है हावी कठोरता,
उसकी कोमलता पर, तब।
हृदय के सूखे रेगिस्तान में,
शीतल जल की धारा
बहाती हूँ मैं, वेदना हरती हूँ।
हूँ मैं उसकी सहचरी,
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

राजनीति व समाज सेवा
उद्योग, खेल या हो चलचित्र,
खुद को साबित किया है हर जगह,
हासिल किया है अपने धैर्य व बल से,
फिर मैं अवला क्यों ?
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।

कौन कहता है,
स्वतन्त्र नहीं हूँ मैं,
स्वतन्त्र तो हूँ, पर स्वाधीनता का
अनुचित, प्रयोग नहीं करती।
पुरूष शक्ति को जन्म देती हूँ,
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।
आओ! बदल डालो उस छवि को
जो कभी कमज़ोर थी,
बाहर निकलो,
अबला जीवन की कहानी से
भर लो चमक,
आँखों में आशाओं की,
त्याग दो,
कहानी आँसुओं की।
मिलकर आवाज उठाओ,
मुझसे श्रेष्ठ कौन ?
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।
मैं हूँ नारी शक्तिशाली।